देवी-देवताओं की उपासना : खण्ड १

परमेश्वर एवं ईश्वर

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातन के ग्रन्थों की भारत की भाषाओं के अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४४, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

अप्रैल २०२४ तक ३६५ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९६ लाख ५४ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजी के आध्यात्मिक शोधकार्य का संक्षिप्त परिचय

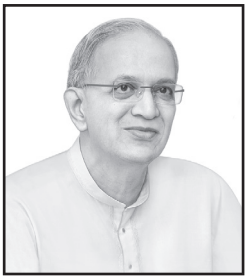

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से १५.५.२०२४ तक १२७ साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०५८ साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापना की उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन की ग्रन्थ-रचना की सेवा करने के साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्री के (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात' में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

अध्याय १. परमेश्वर, ईश्वर एवं अवतार शब्दों के अर्थ ९

१. शब्दों से सम्बन्धित दुविधा ९

२. शब्दों का अर्थ ९

अध्याय २. परमेश्वर ११

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ ११

२. परमेश्वरका वाचक १२

३. विशेषताएं १२

४. परमेश्वर एवं अन्य १५

५. साधकको होनेवाली अनुभूति १६

अध्याय ३. ईश्वर १७

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ १७

२. कुछ अन्य नाम १७

३. व्याख्या १७

४. विशेषताएं एवं कार्य १८

५. निवासस्थान ३२

६. ईश्वर एवं मनुष्य ३३
७. साधक को होनेवाली अनुभूति ३८
८. आकाशवाणी, ईश्वर का मनुष्य से सम्पर्क ४०
९. ईश्वर एवं अन्य ४३

卐 कुछ आनुषंगिक सूत्र ५१
卐 प्रस्तुत ग्रन्थ की असामान्यता समझ लें ! ५३
卐 संकलनकर्ताओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण ५६

टिप्पणियां : १. सर्व भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा, हिन्दुओं के समृद्ध एवं गौरवशाली संस्कृति का प्रतीक है । ग्रन्थ में संस्कृत श्लोक छापना, एक प्रकार से हिन्दू संस्कृति को संजोए रखने का छोटासा प्रयत्न है ।

२. ग्रन्थ में अन्य सन्दर्भग्रन्थों से तथा लेखन से कुछ सूत्र लिए हैं । ऐसे सूत्रों के अन्त में कोष्ठक में छोटे आकार में सन्दर्भक्रमांक लिखा गया है । उसका विवरण ग्रन्थ के अन्त में 'सन्दर्भसूची' में दिया गया है ।

ग्रन्थ की विशेषता दर्शानेवाला सूक्ष्म स्तरीय प्रयोग !

प्रस्तुत ग्रन्थ पटल पर (टेबल पर) रखकर हथेली ग्रन्थ के मुखपृष्ठ से २ – ३ सें.मी. दूर रखें । 'क्या हथेली पर स्पन्दन (सूक्ष्म संवेदनाएं) अनुभव होते हैं ? 'मन को क्या अनुभव होता है, अच्छा अथवा कष्टदायक ?', इस ओर ध्यान दें । तदुपरान्त हथेली ग्रन्थ के ऊपर से सीधी रेखा में उठाते जाएं । ऐसा करते समय 'ग्रन्थ से कितने ऊपर तक हथेली में संवेदना होती है ?', यह भी अनुभव करें । कुछ लोग पहले प्रयास में संवेदना नहीं अनुभव कर पाएंगे । तब यह प्रयोग पुनः करें । हथेली में संवेदना होना बंद हो जाए, तब यह प्रयोग रोक दें । इस प्रयोग का उत्तर पृष्ठ '५५' पर दिया है ।

भूमिका

जिनके द्वारा हमारी उत्पत्ति हुई एवं जो चराचर में समाए हैं, ऐसे ईश्वर के प्रति आकर्षण एवं उत्सुकता मनुष्यजाति को अनादिकाल से रही है । परमेश्वर, ईश्वर, अवतार एवं देवता जैसे शब्दों से सामान्य व्यक्ति परिचित होते हैं; परन्तु विभिन्न स्थानोंपर विविध अर्थों से ऐसे शब्द व्यक्त किए जाते हैं, जिस कारण कई लोगों को दुविधा होती है । इसके अतिरिक्त, जिज्ञासु उपासकों के मन में परमेश्वर, ईश्वर, अवतार एवं देवताओं के सन्दर्भ में अनेक प्रश्न उठते हैं, उदाहरणार्थ परमेश्वर यदि निर्गुण और निराकार हैं, तो वे सगुणरूप में कैसे दर्शन देते हैं ? ईश्वर यदि एक हैं, तो उनके विविध रूपों के वर्णन कैसे पाए जाते हैं ? ईश्वर संकल्प से सबकुछ कर सकते हैं, तो वे भक्तों की रक्षा हेतु विभिन्न अवतार क्यों लेते हैं ? जब देवता मनुष्यों के समान आपस में झगडते हैं, राक्षसों से लडते हुए पराजित भी होते हैं, फिर उनकी उपासना क्यों करनी चाहिए ? इन जिज्ञासुओं का शंकासमाधान हो, साथ ही परमेश्वर, ईश्वर आदि शब्दों से सम्बन्धित दुविधाएं दूर हों, इस हेतु प्रस्तुत ग्रन्थ में स्पष्ट किया गया है कि परमेश्वर एवं ईश्वर वास्तव में क्या हैं । (इस ग्रन्थ की पृष्ठसंख्या अधिक न हो जाए, इसलिए अवतार एवं देवताओं के सन्दर्भ में उत्पन्न होनेवाले प्रश्नों का निराकरण यहां न करते हुए, हमारे 'देवता' एवं 'अवतार' इन दो भिन्न ग्रन्थों में प्रकाशित किया जाएगा ।)

किसी के सम्बन्ध में, उदा. किसी देश के अपरिचित व्यक्ति के गुणों की जानकारी न हो, तो उसके प्रति हममें प्रेम नहीं उत्पन्न होता । उसी प्रकार परमेश्वर एवं ईश्वर की जानकारी न हो, तो उनकी उपासना करना हमारे लिए कठिन हो जाता है । इस दृष्टि से इस ग्रन्थ में उनके विविध गुण, विशेषताएं, कार्य, मनुष्य के साथ उनका सम्बन्ध आदि जानकारी के साथ, उनके सन्दर्भ में साधकों की अनुभूतियां भी दी हैं ।

इस ग्रन्थ को पढकर अधिकाधिक लोगों की ईश्वर के प्रति उपासना दृढ हो, यही श्री गुरुचरणों में प्रार्थना है । – **संकलनकर्ता**

('अध्यात्मशास्त्र' ग्रन्थमाला के सर्व खण्डों की संयुक्त भूमिका 'धर्म का मूलभूत विवेचन' में दी है ।)